HIN2A07b texte 2 सफलता की कुजी

चंद्रकांत एक सुस्त लड़का था। वह मेहनत करने से जी चुराता और उछलकूद तथा खेलने में अपना समय जाया करता रहता था। फेल होने पर उसे बहुत लज्जित होना पडता था।

असल में उस का विश्वास था कि 'भगवान' की पूजा करने से सब कार्य पूरे हो जाएंगे। जब परीक्षा में १५ दिन शेष रह जाते तो वह प्रार्थना करते हुए कहता, "भगवान, आप का ही सहारा है। मेरा बेड़ा पार लगा देना, हे रामचंद्र, दिन रह गए पंद्राह"।

जब परीक्षा में १२ दिन रहे जाते तो वह प्रार्थना के बाद कहता, "हे राम प्यारा, दिन रह गए बारा"।

इसी प्रकार ७ दिन की अवधी शेष रहने पर वह गिड़गिड़ाता, "हे राम दाता, दिन रहे गए साता"। आख़िर जब कुल ३ दिन का समय परीक्षा में रह जाता तो वह अत्यधिक घबराई हालत में बड़बड़ाता, "हे राम दीना, दिन रह गए तीना"।

फिर वह कभी इस पुस्तक को पढ़ता तो कभी उसको, परंतु उसके दिमाग़ में कुछ भी न बैठता।

एक दिन चंद्रकात की इन हरकतों को उस के चाचा ने छिप कर देख लिया। वह उस की असफलता का कारण भांप गए। तब मन ही मन इन्होंने उसे सबक सिखाने की योजना बना डाली।

अगले सोमवार को परीक्षाफल निकला। चंद्रकांत फिर फ़ेल हो गया था। वह सीधे पूजागृह में घुसा और रोष भरे स्वर में बोला, "भगवान, मेरी पूजा का यही फल दिया तूने। मैंने तो सुना था कि तू अपने भक्तों की रक्षा करता है और उन के सब दुखों को दूर करता है।"

तभी मूर्ति की तरफ़ से गंभीर स्वर गूंजा, "हे मूर्ख भक्त, भगवान क्या तेरा नौकर है, जो तेरा काम पूरा करता रहे? परीक्षा तो तुम को ही देनी है। मैं कैसे तेरे बदले सवालों का जवाब लिख सकता हूं?"

चंद्रकांत सहसा ही चौंक पड़ा, "फिर आप की पूजा का क्या अर्थ है? इस तरह तो आप पर से मुनष्यों का विश्वास ही उठ जाएगा।"

"चुप", स्वर तीव्र हो गया, "तू लगाकर अपनी पुस्तकें नहीं पढ़ता। पढ़ाई में मन नहीं लगाता। अपना बहुमूल्य समय व्यर्थ गंवाता रहता है। इस तरह तू कभी परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता। मंत्र पढ़ने और गिड़गिड़ाने से कुछ नहीं होने वाला"।

"तो फिर आप कैसे खुश होते हैं?", चंद्रकांत ने अत्यंत भयभीत स्वर में प्रश्न किया।

स्वर गूंजा, "मैं उसी इनसान से प्रसन्न होता हूं जो विश्वास और लगन से भरपूर मेहनत करता है। मेहनत ही सफलता की असली कुंजी है, समझे?"

"जी, समझ गया", कठिनाई से चंद्रकांत बोला।

"तो जा, दिल लगाकर पढ़, समय का महत्व पहचान। सब ठीक हो जाएगा"।

चंद्रकांत हाथ जोड़कर लौट आया। अब वह अपनी गलती समझ गया था। उसने मेहनत के साथ पढ़ाई करके सफल होने का संकल्प कर लिया।

कहना न होगा कि मूर्ति के पीछे से उभरता स्वर चंद्रकांत के चाचा का था।

चंद्रकांत ने खूब मेहनत के साथ पढ़ाई की। वार्षिक परीक्षा में वह अपनी कक्षा में प्रथम आया। प्रधानाचार्या ने उसे शाबाशी दी। चंद्रकांत के मातापिता भी उस की सफलता से बहुत खुश थे। चंद्रकांत के सहपाठी, जो उस से नफ़रत करते थे, अब उस के अच्छे मित्र बन गए थे।

beṛā = nāv

Questions générales: 1. Pourquoi Chandrakant a honte ? 2 Quel moyen utilise-t-il pour résoudre son problème ? Quel est le résultat ? 3. Que reproche-t-il à Ram ? 4. Quel genre de dévots Ram apprécie-t-il ? 5. Quelle résolution prend alors Chandrakant ? 6. Quel est le temps conjugué dominant dans le récit des paragr 2-4 ? par quoi pourriez-vous le remplacer ? 7. Quel est le temps conjugué dominant dans la suite du récit ? 8. Que traduisent ces deux temps par rapport au déroulement de l'histoire ? Traduction et lexique-grammaire : 1. traduisez les phrases et expressions soulignées (attention à l'ordre des termes, aux particules, aux temps des verbes). 2. Dans les deux derniers paragraphes, expliquez l'accord et la formation des mots soulignées